राम अवतार बैरवा

शीत राग की मधु बेला में जब सब पत्ते झड़ जाएंगे,
तलहट से कुछ नन्हें पौधे नम घूप पकड़ने आएंगे।

बीच सड़क पे बे-बस अम्मा तारों से लिपटके रोयेगी,
आधी रात जब भूखे बच्चे चांद को खाने जाएंगे ।

सावन को कसम दिला देना, इस बार न बरसे सूरत पे,
हम किसी सूखे दरिया से प्यास मांगने जाएंगे ।

रात की परवाह मत करना हम तन्हा एक मुसाफिर हैं,
जब तारा आखिरी छिप जाए, वहीं तुम्हें हम पाएंगे।

एक चादर अपने आंगन में बेवजह ही तान के देखो,
शाम मुहाने कई मुसाफिर एक रात काटने आएंगे।

मेरे मन के सुंदर पंछी जब पिंजरे में बंदी होंगे,
तब धूप की चिड़िया चीखेगी छांव के कौवे गाएंगे ।

मनोज मानव

समझ कर इशारे ये बरसात के।
चलो खोल दें ताले जज्बात के।

तुम्हें कुछ है कहना तो सीधे कहो,
बहाने न खोजो बिना बात के।

जली बाती यश क्यों मिला दीप को,
समझ बात आयी नहीं रात के।

बड़ा लक्ष्य यूँ ही नहीं है सधा,
सहे हैं बहुत ताने औकात के।

कभी एक भी तो गँवाया नहीं,
मिले जितने अवसर उन्हें घात के।

करो लाख कोशिश दबाने की तुम,
नहीं रुकते चर्चे करामात के।

मिले मौका मानव तो मत छोड़ना,
बहुत फायदे हैं मुलाकात के।

ISSN:2583-8849